Dated
11/8/2020

B.A Part I (H) Philosophy

डा० अनीता कुमारी गुप्ता

सांख्य दर्शन में प्रकृति की व्याख्या करें। जे० के० कॉलेज बिरौल

Ans. सांख्य के अनुसार प्रकृति ही वह प्रथम कारण है जिससे सम्पूर्ण विश्व की समस्त वस्तुएं उद्भूत हुई हैं। इसे विभिन्न नामों से जाना जाता है। जैसे - प्रधान, ब्रह्म, अव्यक्त, अनुमान, जड़, माया, शक्ति, अविद्या आदि। प्रकृति के स्वरूप की विवेचना करते हुए कहा गया है प्रकृति एक है, स्वतंत्र है, अकारण है, अदृश्य है, अव्यक्त है, अचेतन है, व्यक्तित्वहीन है, शाश्वत है, अनादि है, अनंत, दिक्-काल से परे है। प्रकृति की स्वतंत्र सत्ता सिद्ध करते हुए ईश्वर कृष्ण ने अपने सांख्यकारिका - 15 में लिखा है :—

"भेदानां परिमाणात् समन्वयात् शक्तितः प्रवृत्तेश्च।
कारणकार्य विभागादविभागाद् वैश्वरूप्यस्य।"

सांख्य दर्शन में प्रकृति के तीन गुणों की चर्चा मिलती है सत्व, रजस, तमस। इन तीनों गुणों की चर्चा देखने को मिलती है। इन तीनों गुणों की साम्यावस्था को ही प्रकृति कहा गया है। गुणानां साम्यावस्था। प्रकृति के इन तीनों गुणों में सत्व गुण ज्ञान का प्रतीक है। यह श्वेत वर्ण है तथा स्वयं प्रकाशपूर्ण है। यह सुख का कारण माना गया है। इसका स्वरूप हल्का तथा लघु होता है। रजस क्रिया का प्रेरक है। इसका स्वरूप गतिशील है। इसका रंग लाल माना गया है। यह दुःख का कारण होता है। विषाद चिन्ता, अतृप्ति आदि का आश्रयदाता है। तमस अज्ञान का अन्धकार का प्रतीक माना गया है। तमस निष्क्रियता और जड़ता का द्योतक है। इसका रंग काला है। यह ज्ञान प्राप्ति में बाधक है।

—X—